

# हरित प्रौद्योगिकी वर्तमान स्थिति, चुनौतियां और आगे की राह

-मंजुला वाधवा



हरित प्रौद्योगिकी का भविष्य केवल नए गैजेट्स और समाधानों के बारे में न होकर जीवन जीने के अधिक टिकाऊ तरीके की ओर मानसिकता में बदलाव के बारे में है। व्यापार करने में आसानी और राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान प्राप्त करने पर केंद्रित भारत की लगातार विकसित हो रही नीतियां और सुधार हरित प्रौद्योगिकियों को तेजी से अपनाने और दुनिया भर में निवेशकों को सुविधा प्रदान करने का रास्ता दे रहे हैं। हरित प्रौद्योगिकियां न केवल उद्योगों में बदलाव ला रही हैं बल्कि अधिक टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त कर रही हैं।

**ग्री**नहाउस गैस उत्सर्जन, प्राकृतिक संसाधनों की कमी, लगातार बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग के व्यापक प्रभाव को देखते हुए पिछले दो दशकों से विभिन्न हितधारक, संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) और स्वच्छ एवं हरित प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर उनके कार्यान्वयन पर विचार कर रहे हैं। स्वच्छ प्रौद्योगिकी का तात्पर्य पर्यावरणीय क्षति के बिना ऊर्जा की मांगों को पूरा करने के लिए पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों के उपयोग से है और हरित प्रौद्योगिकी का तात्पर्य पर्यावरण के अनुकूल नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग से है।

आइए, हरित प्रौद्योगिकी की अवधारणा को समझें। यह उन उत्पादों, प्रणालियों और रूपरेखाओं का निर्माण और अनुप्रयोग है जिसका उद्देश्य मानवीय गतिविधियों के नकारात्मक परिणामों को कम करके प्राकृतिक पर्यावरण और उसके गुणों की रक्षा करना है। सरल शब्दों में 'हरित प्रौद्योगिकी' शब्द उन उपकरणों, सेवाओं या प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है जो कुछ मानदंडों का पालन करते हैं यानी, यह ग्रीनहाउस गैसों (जीएचजी) का उत्सर्जन नहीं करते हैं या बहुत कम करते हैं, उपयोग करने के लिए

सुरक्षित हैं, और सभी के जीवन के लिए एक स्वस्थ और बेहतर पर्यावरण को प्रोत्साहित करते हैं। यह बिजली और प्राकृतिक संसाधन की खपत को कम करता है और प्राकृतिक ऊर्जा के उपयोग को भी प्रोत्साहित करता है। हरित प्रौद्योगिकियां मोटे तौर पर पर्यावरण संवर्धन और संसाधन दक्षता पर केंद्रित नवाचारों को शामिल करती हैं। इनमें सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा समाधान से लेकर उन्नत अपशिष्ट प्रबंधन समाधान और पर्यावरण-अनुकूल सामग्री तक शामिल हैं।

ये प्रौद्योगिकियां जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी जैसी वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने में महत्वपूर्ण हैं, जो पारंपरिक प्रथाओं से टिकाऊ विकल्पों की ओर एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक हैं। वे प्रगति और विकास के नए अवसर प्रदान करते हैं, पारंपरिक व्यवसाय मॉडल को चुनौती देते हैं और स्थायी व्यवसाय संचालन को बढ़ावा देते हैं। यह बदलाव हरित स्टार्टअप्स की बढ़ती संख्या और सतत नवाचारों में निवेश बढ़ने से स्पष्ट है। ऊर्जा उत्पादन के लिए सौर और पवन ऊर्जा जैसी नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियां सबसे आगे हैं, जो जीवाश्म

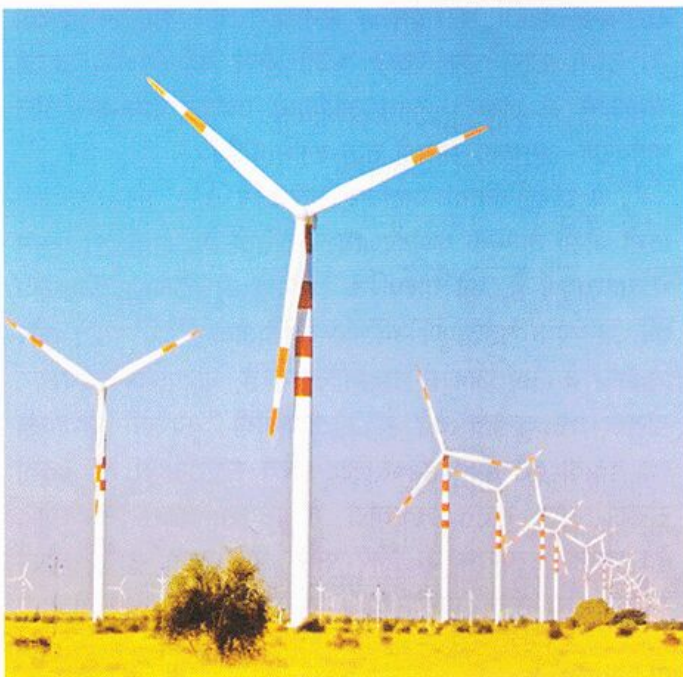
लेखिका नाबार्ड में उपमहाप्रबंधक हैं। ई-मेल : [manjula.jaipur@gmail.com](mailto:manjula.jaipur@gmail.com)

ईंधन के विकल्प पेश करती हैं। इमारतों और उद्योगों में ऊर्जा की खपत को कम करने पर ध्यान केंद्रित करने वाली ऊर्जा दक्षता प्रौद्योगिकियां भी महत्वपूर्ण हैं।

इलेक्ट्रिक वाहनों और टिकाऊ सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों सहित हरित परिवहन प्रौद्योगिकियां गति पकड़ रही हैं। इसके अलावा, अपशिष्ट प्रबंधन प्रौद्योगिकियां कचरे के निपटान के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव ला रही हैं, इसे टिकाऊ संसाधनों या ऊर्जा में बदल रही हैं। अंत में, निर्माण उद्योग में पारंपरिक, गैर-नवीकरणीय सामग्रियों की जगह टिकाऊ सामग्री ले रही है। ये विभिन्न प्रकार की प्रौद्योगिकियां पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में उनके व्यापक दायरे को रेखांकित करती हैं। इस प्रकार, यह प्रकृति को एक उच्च तकनीक सहायता देने जैसा है।

क्या आपने कभी सोचा है कि हम आधुनिक तकनीक का लाभ उठाते हुए भी अपने ग्रह को हरा-भरा कैसे बना सकते हैं? यहां ग्रीन टेक्नोलॉजी के लक्ष्यों का सारांश दिया जा रहा है, जो इस प्रकार है:-

- ✓ ऊर्जा मांग में वृद्धि दर को कम करना जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा
- ✓ हरित प्रौद्योगिकी क्षेत्र के विकास और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में इसके योगदान को बढ़ावा देना
- ✓ हरित प्रौद्योगिकी के उत्पादन में प्रतिस्पर्धा की संभावना बढ़ाना और इसके फील्ड प्रदर्शन में सुधार लाना
- ✓ भावी पीढ़ी के लिए दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करना
- ✓ इसके अलावा, हरित प्रौद्योगिकियों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ उनके व्यापक उपयोग को बढ़ावा देना।



हरित प्रौद्योगिकी की वर्तमान स्थिति और विस्तार की चर्चा करते हुए हम विविध क्षेत्रों में इनके पदचिह्न पाते हैं, जैसे

**ऊर्जा क्षेत्र :** बिजली उत्पादन और ऊर्जा संसाधन प्रबंधन में हरित प्रौद्योगिकी, जिसमें विनिर्माण और वाणिज्यिक क्षेत्रों में सह-उत्पादन भी शामिल है।

**भवन निर्माण क्षेत्र :** घरों के डिजाईन, प्रबंधन, मरम्मत में हरित प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है।

**जल और अपशिष्ट प्रबंधन क्षेत्र :** जल आपूर्ति नियंत्रण और उपयोग, अपशिष्ट जल निपटान और ठोस अपशिष्ट लैंडफिल में हरित प्रौद्योगिकी का उपयोग।

**परिवहन क्षेत्र :** जैव ईंधन और सार्वजनिक परिवहन सहित परिवहन अवसंरचना और ऑटोमोबाइल में हरित प्रौद्योगिकी का समावेशन।

अब जब हमने हरित प्रौद्योगिकी की दुनिया में कदम रख दिया है, तो आइए, हम इस मामले की गहराई में उतरें। हरित प्रौद्योगिकियों द्वारा प्रस्तुत विशाल हैं। आर्थिक रूप से वे नए बाजार खोलते हैं और नौकरियां पैदा करते हैं। ये प्रौद्योगिकियाँ व्यावसायिक नवाचार को भी बढ़ावा देती हैं, जिससे कंपनियों को नए उत्पाद और सेवाएं विकसित करने में मदद मिलती है जो स्थिरता के लिए बढ़ती उपभोक्ता मांग को पूरा करते हैं। पर्यावरण की दृष्टि से, हरित प्रौद्योगिकियां जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षरण के खिलाफ लड़ाई में योगदान करते हुए कार्बन उत्सर्जन को काफी कम कर देती हैं। सामाजिक रूप से, वे स्वच्छ हवा और पानी तक पहुँच प्रदान करके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करती हैं। इसके अतिरिक्त, वे राष्ट्रीय स्तर पर वैश्विक स्थिरता प्राप्त करने का मार्ग प्रदान करती हैं। ये अवसर आर्थिक विकास की गति को बढ़ा सकती हैं और अधिक टिकाऊ और न्यायसंगत दुनिया की दिशा में एक कदम के रूप में काम कर सकती हैं।

वास्तव में, यह आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ पर्यावरणीय मुद्दों को हल करने का सबसे अच्छा तरीका है। यह वर्तमान में जलवायु परिवर्तन की घटनाओं सहित पर्यावरणीय बेहतरी को प्राथमिकता देने वाले सरकारों के वैश्विक एजेंडे के साथ भी संरेखित हैं। हरित प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह पर्यावरण को अधिक टिकाऊ बनाकर लोगों के जीवन-स्तर में सुधार करती हैं। यदि वायु, जल और ध्वनि का प्रदूषण जारी रहा तो इसका जीवन की गुणवत्ता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा। जैसे-जैसे हम हरित प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हैं, पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव



कम होता जाता है। राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए हरित प्रौद्योगिकी में बहुत सारी संभावनाएं हैं। ऐसे उद्योग जो हरित प्रौद्योगिकियों पर आधारित वस्तुओं का उपयोग या उत्पादन करते हैं, वे स्थानीय आबादी को काम खोजने में मदद कर सकते हैं।

आने वाले दिनों में हरित प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनेक साहसिक नवाचार आएंगे। एक महत्वपूर्ण विकास सौर ऊर्जा के क्षेत्र में है, जहां प्रगति ने अधिक कुशल और किफायती सौर पैनलों को जन्म दिया है, जिससे सौर ऊर्जा से नवीकरणीय ऊर्जा व्यापक उपभोक्ताओं के लिए सुलभ हो गई है। उल्लेखनीय प्रगति का एक और क्षेत्र इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी में देखा जा रहा है। बैटरी लाइफ और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार के कारण ईवी दिन-ब-दिन लोकप्रिय होती जा रही है। अपशिष्ट प्रबंधन प्रौद्योगिकियां भी परिवर्तन के दौर से गुजर रही हैं। पुनर्चक्रण और अपशिष्ट से ऊर्जा प्रक्रियाओं में नवाचार संसाधनों के अधिक टिकाऊ प्रबंधन को सक्षम कर रहे हैं। इन प्रौद्योगिकियों में लैंडफिल अपशिष्ट और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने की क्षमता है। इसके अलावा, ऊर्जा दक्षता और न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव के लिए डिजाइन की गई टिकाऊ इमारतों के साथ, हरित वास्तुकला में तेजी आ रही है। ये संरचनाएं टिकाऊ सामग्रियों का उपयोग करती हैं और हरी छतों और ऊर्जा-कुशल प्रकाश व्यवस्था जैसी सुविधाओं को शामिल करती हैं, जो शहरी स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं और आसपास के क्षेत्रों में तापमान कम करती हैं।

कृषि क्षेत्र को देखते हुए हम पाते हैं कि टिकाऊ कृषि प्रौद्योगिकियां विकसित हो रही हैं। सटीक खेती जैसी तकनीकें, जो कुशल संसाधन उपयोग के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) का उपयोग करती हैं, खाद्य उत्पादन में क्रांतिकारी बदलाव ला रही हैं, जिससे यह अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के लिए कम हानिकारक हो गया है। ये चित्र हरित प्रौद्योगिकियों की गतिशील और प्रभावशाली प्रकृति को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। वे न केवल उद्योगों में बदलाव ला रहे हैं बल्कि अधिक टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त कर रहे हैं। निसंदेह, इन प्रौद्योगिकियों का निरंतर विकास और इन्हें अपनाना हमारे समय की वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में महत्वपूर्ण होगा।

वर्तमान में विनिर्माण क्षेत्र देश की कुल ऊर्जा खपत में लगभग 40% योगदान देता है और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के प्रमुख स्रोतों में से एक है। जैसे-जैसे विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि देखी जा रही है, प्रदूषण में उनके महत्वपूर्ण योगदान के कारण कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस की तीव्र खपत चिंता का विषय बन गई है। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को अपनाने से कंपनियों को अपने कार्बन उत्सर्जन को कम करने के अवसर मिलते हैं। बायोमास, हरित कोयला और सौर ऊर्जा जैसी नवीकरणीय ऊर्जा विनिर्माण प्रक्रियाओं के लिए विश्वसनीय ऊर्जा प्रदान कर सकती हैं।

एक अन्य पहल राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन है, जिससे अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय रूप से डिकार्बोनाइजेशन

होगा, जीवाश्म ईंधन के आयात पर निर्भरता कम होगी और भारत हरित हाइड्रोजन में प्रौद्योगिकी और बाजार का नेतृत्व संभालने में सक्षम होगा। प्रारंभ में, 2029-30 तक 17,490 करोड़ के परिव्यय के साथ प्रस्तावित दो अलग-अलग वित्तीय प्रोत्साहन तंत्र हैं:

- इलेक्ट्रोलाइजर के विनिर्माण के लिए प्रोत्साहन
- हरित हाइड्रोजन के उत्पादन के लिए प्रोत्साहन।

यह आपूर्ति शृंखलाओं के विकास में मदद करेगा जो हाइड्रोजन का कुशलतापूर्वक परिवहन और वितरण कर सकती हैं। इसमें निर्यात के साथ-साथ घरेलू खपत के लिए पाइपलाइनों, टैंकरों, मध्यवर्ती भंडारण सुविधाओं और अंतिम चरण के वितरण नेटवर्क का उपयोग शामिल है।

हरित प्रौद्योगिकियों की यात्रा बेशक काफी आशावादी है, लेकिन चुनौतियों से रहित नहीं है। आर्थिक रूप से, हरित तकनीक के लिए उच्च प्रारंभिक निवेश लागत एक बड़ी बाधा है। व्यवसायों को हरित प्रौद्योगिकियों को लागू करने के लिए आवश्यक धन जुटाने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। मौजूदा प्रणालियों और बुनियादी ढांचे में व्यापक रूप से अपनाने और समावेशन में भी चुनौतियां हैं।

नियामक बाधाएं इन प्रौद्योगिकियों के विकास और कार्यान्वयन में बाधा डाल सकती हैं। इसके अलावा, व्यापक रूप से अपनाने के लिए सार्वजनिक स्वीकृति और जागरूकता महत्वपूर्ण बनी हुई है। हरित प्रौद्योगिकी को अपनाने में प्रमुख चुनौतियों में से एक कम ऊर्जा खपत की आवश्यकता है, जिसके लिए हमें अपनी आदतों और जीवनशैली को बदलने की आवश्यकता है। अपशिष्ट को कम करना एक और चुनौती है। हरित प्रौद्योगिकी एक चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देती है जहां अपशिष्ट को कम किया जाता है और संसाधनों का पुनः उपयोग या पुनर्चक्रण किया जाता है। हालांकि, इसे प्राप्त करने की दृष्टि से, हमें न केवल अधिक रिसाइक्लिंग की आवश्यकता है बल्कि ऐसे उत्पादों और प्रणालियों को डिजाइन करने की आवश्यकता है जो कम अपशिष्ट उत्पन्न करते हैं। उत्पादों को न केवल कार्यक्षमता और दक्षता के लिए बल्कि दीर्घायु और जीवन के अंत तक पुनर्चक्रण के लिए भी डिजाइन करने की आवश्यकता है।

कृषि में अधिक पर्यावरण-अनुकूल पद्धतियों की ओर बदलाव एक चुनौती पैदा कर सकता है। यह एक जटिल मुद्दा है जिसके लिए उत्पादकता बनाए रखने और पर्यावरण की रक्षा के बीच संतुलन की आवश्यकता है। हरित प्रौद्योगिकी का उद्देश्य पानी की खपत को कम करना भी

है। इस उद्देश्य को साकार करने के लिए, विशेष रूप से उन उद्योगों में, जहां पानी का उपयोग अधिक है, एक लीक से हटकर दृष्टिकोण और संरक्षण के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। एक और चुनौती वायु प्रदूषण को कम करना है, खासकर बड़े शहरों में जहां प्रदूषण का स्तर बहुत अधिक है। इसे प्रभावी बनाने के लिए स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों, बेहतर औद्योगिक प्रक्रियाओं और सख्त नियमों की आवश्यकता है।

यद्यपि कार्बन फुटप्रिंट को कम करना एक वैश्विक चुनौती है, लेकिन हरित प्रौद्योगिकी इससे निपटने के लिए विशिष्ट रूप से सुसज्जित है। न केवल नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों और ऊर्जा कुशल प्रौद्योगिकियों बल्कि टिकाऊ जीवनशैली की ओर एक सामाजिक बदलाव की भी आवश्यकता है। हरित प्रौद्योगिकियों की क्षमता के सफल समावेशन और अधिकतम लाभ के लिए इन चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है।

वर्टिकल फार्मिंग, नो-टिल फार्मिंग, आहार की आदतों में बदलाव और मांस के बदले पौधों पर आधारित विकल्प और प्रिसिजन किण्वन जैसे नवीन खाद्य पदार्थों को अपनाने से हमें ऐसे खाद्य पदार्थ बनाने में मदद मिल सकती है जो हमारे कार्बन पदचिह्न को कम कर सकते हैं और अधिक टिकाऊ खाद्य प्रणालियों में योगदान कर सकते हैं। विनिर्माण क्षेत्र में चुनौतियां नवीकरणीय स्रोतों को व्यापक रूप से अपनाने में बाधा डालती हैं। उदाहरण के लिए, भारत सौर-आपूर्ति शृंखला के लिए आयातित सामग्रियों पर बहुत अधिक निर्भर है, जिससे विदेशी मुद्रा दबाव बढ़ जाता है। रूढ़िवादी अनुमानों के आधार पर, भारत में प्रत्येक मेगावॉट सौर पीवी बिजली संयंत्र की स्थापना के लिए परियोजना लागत का 50% से अधिक विदेशी मुद्रा के बहिर्वाह का कारण बनता है। इसे दूर करने के लिए, घरेलू सौर मूल्य शृंखला विकसित करने से विनिर्माण क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ नौकरियों के सृजन में भी मदद मिल सकती है।

बायोएनर्जी कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए आशाजनक समाधान प्रदान करती है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जो टिकाऊ और स्वच्छ प्रथाओं में परिवर्तन के लिए चुनौतीपूर्ण हैं। बायोएनर्जी में कृषि अपशिष्ट या ऊर्जा फसलों जैसे कार्बनिक पदार्थों से नवीकरणीय ऊर्जा प्राप्त करना शामिल है। हालांकि विनिर्माण क्षेत्र में बायोएनर्जी को अपनाने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां विनिर्माण उत्पादों के लिए उपभोक्ता और उत्पादक बाजार बायोमॉस संसाधनों में

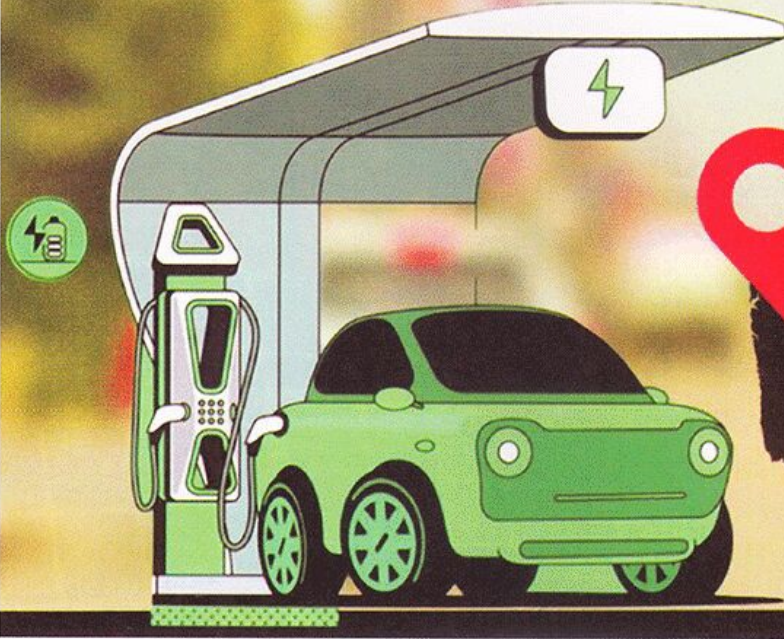
# भारत

में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए

## 10,000 से अधिक पब्लिक

## चार्जिंग स्टेशन स्थापित

किए जा चुके हैं।



### महाराष्ट्र

में **सबसे अधिक**  
**चार्जिंग स्टेशन है।**

प्रचुर मात्रा में नहीं हैं। यह गलत संरेखण बायोमॉस के समावेशन और उपयोग में तार्किक बाधाएं पैदा करता है। व्यापक रूप से अपनाने को सक्षम करने के लिए, कुशल आपूर्ति शृंखला विकसित करने, बायोमॉस संग्रह और प्रसंस्करण अवसंरचना की स्थापना और सहायक नीतियों और प्रोत्साहनों को लागू करने जैसे समाधानों की आवश्यकता है।

इन चुनौतियों पर काबू पाने से विनिर्माण क्षेत्र बायोएनर्जी की क्षमता का दोहन करने, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और स्थिरता को बढ़ावा देने में सक्षम होगा। रसद और परिवहन के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) और हाइब्रिड वाहनों को अपनाने से उत्सर्जन में काफी कमी आ सकती है। 'एक्सपोनेंट एनर्जी' जैसी कुछ कंपनियों ने एक चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर और बैटरी पैक विकसित किया है जो वाणिज्यिक इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए तेजी से 15 मिनट की चार्जिंग को सक्षम बनाता है, जिनकी यात्री वाहनों की तुलना में अलग आवश्यकताएं होती हैं। 'लॉग9 मटेरियल' विशेष रूप से वाणिज्यिक वाहनों के लिए डिजाइन की गई बैटरियां भी विकसित कर रहा है। विद्युत गतिशीलता की ओर यह बदलाव संपूर्ण विनिर्माण आपूर्ति शृंखला में उत्सर्जन को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

### आगे की राह

हम उम्मीद करते हैं कि हरित प्रौद्योगिकी का भविष्य केवल नए गैजेट्स और समाधानों के बारे में न होकर जीवन जीने के अधिक टिकाऊ तरीके की ओर मानसिकता में बदलाव के बारे में है। व्यापार करने में आसानी और राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान प्राप्त करने पर केंद्रित भारत की लगातार विकसित हो रही नीतियां और सुधार हरित प्रौद्योगिकियों को तेजी से अपनाने और दुनिया भर में निवेशकों को सुविधा प्रदान करने का रास्ता दे रहे हैं। भारत का आकांक्षी जिला कार्यक्रम स्थानीय समुदायों का लाभ उठाकर इस तरह के परिवर्तन को प्रसारित करने की सबसे अच्छी पहल है, क्योंकि यह विकास में क्षेत्रीय विविधताओं में विषमताओं को दूर करता है। ऊर्जा परिवर्तन में अपने बड़े हुए दायरे के साथ कार्यक्रम, हरित ऊर्जा में विश्व नेता के रूप में भारत की महत्वाकांक्षाओं को शक्ति देगा और एजेंडा 2030 को प्राप्त किया जा सकेगा। यह न केवल हमारी हरित ऊर्जा क्रांति के लिए एक प्रकाश-स्तंभ के रूप में कार्य करता है, बल्कि एक ऐसा मॉडल भी प्रदान करता है जिसे दुनिया भर में दोहराया जा सकता है। संक्षेप में, हमें ऑस्ट्रेलियन ग्रीन्स के सीनेटर बॉब ब्राउन के शब्दों को याद रखना चाहिए :-

“भविष्य या तो हरा-भरा होगा या बिल्कुल नहीं होगा”